https://www.studiestoday.com

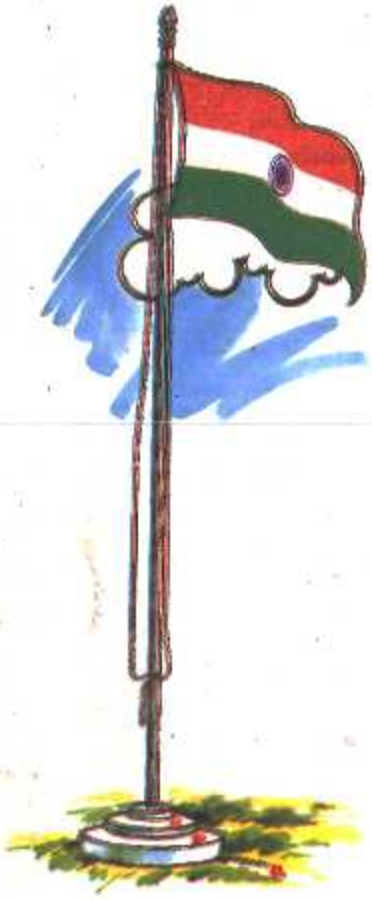

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

आवरण मुद्रण : जे० एम० डी० प्रेस, पटना–6

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

कक्षा-9

पान-फूल

भाग-1

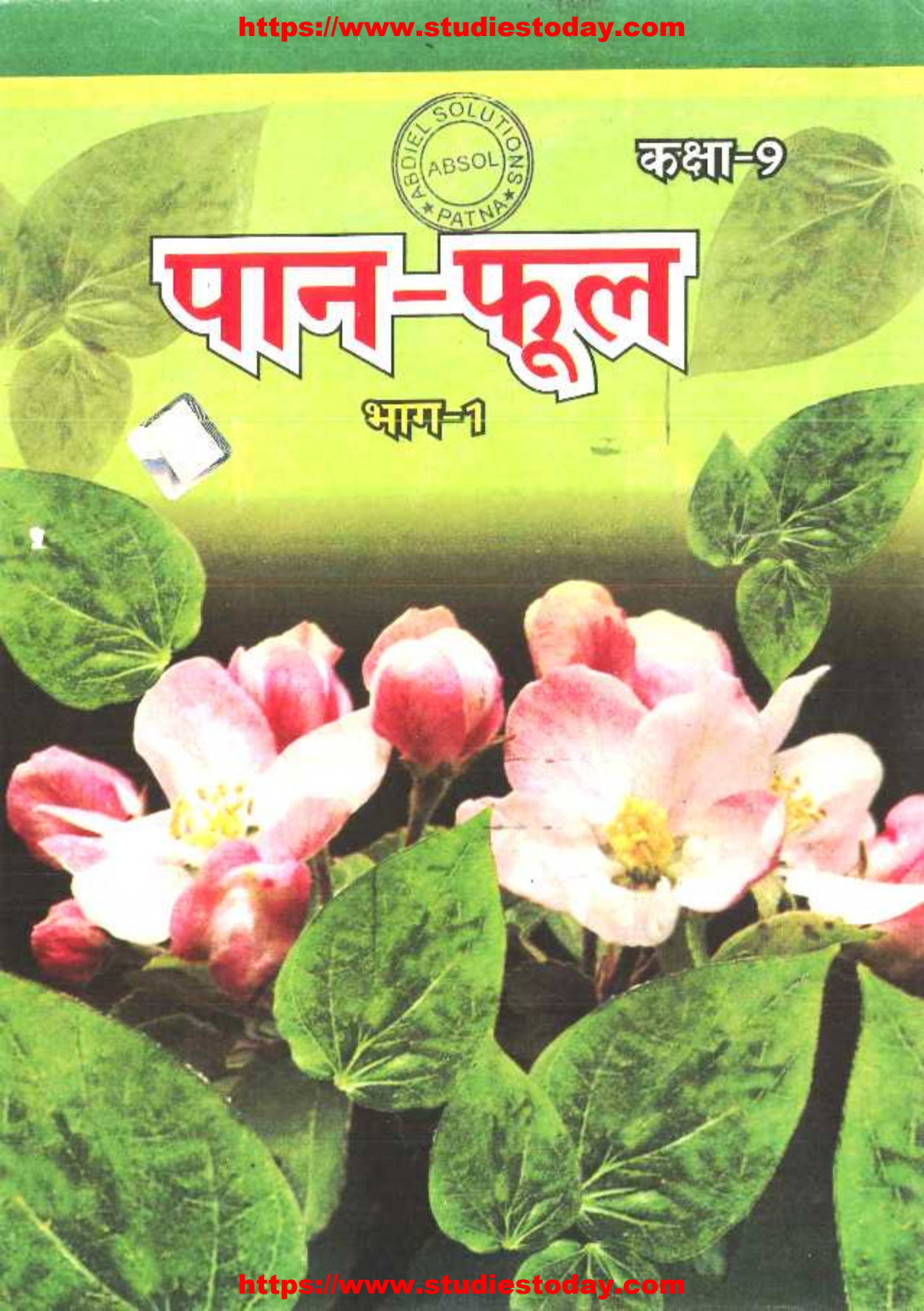

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

Visit us at www.joinindianarmy.nic.in

or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - एक

दरियादास

बिहार राज्य के अन्तर्गत भोजपुर जिला के धरकंधा निवासी पीरनशाह के पुत्र के रूप में सन् 1674 में जनमल दरियादास उच्च कोटि के संत आ समाज सुधारक रहीं। इहाँ के सामाजिक, धार्मिक आ सांस्कृतिक आडंबरन पर करारा प्रहार करलीं। समाज में धर्म के नाम पर फइलल, जात-पात, ऊँच-नीच, हिंदू-मुसलमान जइसन सामाजिक विकृतियन के समाप्त क के सभका के ईश्वर के संतान के रूप में समान भाव से रहे के उपदेश देलीं। जदपि समाज के आडंबरवादी लोगन द्वारा इहाँ के सिद्ध संत के रूप में आदर देलस। इहाँ के शिष्यन में जात धरम आ ऊँच नीच के कवनो भेद भाव ना रहे। समाज के अछूत मुसलमान आ बाद में सवर्ण लोग तक इहाँ के लोहा मानके गुरु रूप में स्वीकार कइलस। इहाँ के लगभग बीस गो किताबन के रचना कइलीं। जवन दरिया सागर में एके जगे संग्रहित बा। आजो इहाँ के नाम पर दरिया पंथ चलेला। एह पंथ के माने वाला हजारो भक्त बाड़न। कई स्थान पर आश्रम के निर्माण भइल बा। मुख्य आश्रम इहाँ के जन्म स्थान धरकंधा आश्रम मानल जाला। 106 बरिस के दीर्घ जीवन जिअला के बाद सन् 1780 में दरिया साहेब के देहावसान भइल। सामाजिक समरसता आ सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित करे वाला संत कबीरदास दादू रैदास बगैरह के कोटि में इहों के समादृत बानी।

विषय प्रवेश

संत कवि दरियादास एह संकलित पदन में निरगुन ब्रह्म के सर्व व्यापकता पर प्रकाश डलले बानी। इहाँ के कहनाम बा कि भीतर के जमल मइल के धोअला बिना ऊपरी तन के साफ कइला से सत्पुरुष पर माया के असर नइखे, बाकिर सभे देवता, जोगी, जती, त्रिदेव आदि माया के फेर में झूल रहल बाड़न। इंगला पिंगला आ सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से सुकृत द्वारा बतावल विधि से ब्रह्म के जानल जा सकेला। शब्द तत्व के महत्त्व पर दरिया साहेब प्रकाश डलले बानी। तन के महल में रहे वाला हरि के जुगुति से प्राप्त कहल जा सकेला। एही तथ्य के बतावे के कोशिश एह पदन में कहल गइल बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

1. पद

भीतरि मैलि चहल कै लागी, ऊपर तन का धोवे है।।
अवगति मुरति महल के भीतर, वा का पंथन जोवै है।।
जुगुति बिना कोई भेद न पावैं, साधु संगति का गोबै है।।
कह दरिया कुटने बे गीदी, सीस पटकि का रौबे है।।

2. पद

सत सुकृत दूनों खंभा हो, सुखमनि लागलि डारि।
उरध उरध दूनों मचवा हो, इंगला पिंगला झकझोर।।
कौन सखी सुख बिलसै हो, कौन सखी दुख साथ।
कौन सखिया सुहागिनी हो, कौन कमल गहि हाथ।।
सत सनहे सुख बिलसै हो, कपट करम दुख साथ।
पिया मुख सखिया सुहागिनि हो, राधा कमल गहि हाथ।।
कौन झुलावै कौन झूलहिं हो, कौन बैठलि खाट।
सत्त पुरुष नहिं झूलहिं हो, कुमति रोके बाट।।
सुन नर मुनि सब झूलहिं हो, झूलहिं तीनि देव।
गनपति फनपति झूलहिं हो, जोगि जती सुकदेव।।
जीब संतु सब झूलहिं हो, कोई कहै न संदेस।।
सत्त शब्द जिन पावल हो, भयो निर्मल दास।
कहै दरिया दर देखिय हो, देखिय जाय पुरुष के पास।।

BRDIEL SOLUTIONS ABSOC PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संत आ सुकृत दूनो खंभा में कवन चीज के डोर लागल रहे ?
2. दरिया साहेब केकरा के निर्मल मनले बानी ?
3. अवगति मूरत के निवास कहाँ बा ?
4. कवना सखि के सुहागिन मानल गइल बा -
   (क) राधा नियन हाथ में कृष्ण के प्रतीक कमल लेवे वाली के,
   (ख) सुख विलास में मगन रहे वाली के,
   (ग) पिया के करीब रहके उन्हुकर मुँह निहारे वाली के,
   (घ) पिया के खोज में दर दर ठोकर खाये वाली के,

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दरिया साहेब आंतरिक पूजा पर काहे बल देतानी ?
2. दरिया साहेब मूर्ति पूजा के विरोध काहे करत रहीं ?
3. ईश्वर प्राप्ति खातिर दरिया साहेब कवना जुगुति के बात करत बानी ?
4. माया के झूला पर के के झूलत बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दरिया साहेब के संक्षिप्त जीवन परिचय लिखीं।
2. पठित पदन के आधार पर ब्रह्म, जीव आ माया के सरूप स्पष्ट करीं।
3. दरिया साहेब द्वारा वर्णित सत्पुरुष आ सुकृत के व्याख्या प्रस्तुत करीं।
4. निर्गुन भक्ति धारा में दरिया साहेब के महत्व पर प्रकाश डालीं।

परियोजना

1. दरियापंथ पर एगो निबन्ध तैयार करीं।
2. दरियादासी मठ के वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालीं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भाषा अध्ययन

1. नीचे लिखल शब्दन के वाक्य में प्रयोग करीं -
   (क) सुकृत
   (ख) कुमति
   (ग) सनेह
   (घ) सुहागिनी
2. नीचे लिखल शब्दन के विपरीतार्थक शब्द लिखीं -
   (क) सत
   (ख) सुख
   (ग) कपट
   (घ) जीव
   (ङ) निर्मल
   (च) भीतर
   (छ) भेद
   (ज) संगति
   (झ) ऊपर
   (ञ) गहि

शब्द भंडार

1

मैलि	-	गंदगी (मइल)
चहल	-	जमके (गहरा)
अवगति	-	ईश्वर
जोवै	-	जोहल, खोजल
जुगुति	-	उपाय
गोवै	-	छिपावल

2

सत	-	ईश्वर
सुकृत	-	ईश्वर के दूत
सुखमनि	-	सुषुम्ना नाड़ी
डोरि	-	धागा
उरध उरध	-	उचक उचक के (उर्ध्वगामी)
इंगला	-	नाड़ी के नाम

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पिंगला	-	नाड़ी के नाम
बिलसै	-	प्राप्त करे
खाट	-	खटिया
तीनिदेव	-	ब्रह्म, विष्णु, शंकर
गनपति	-	गणेश
फनपति	-	शेषनाग
निर्मल	-	स्वच्छ (विकाररहित)
दर	-	ईश्वर के घर

पाठ से बहरी के चीज

नीचे दीहल पद्य के पढ़ के सवालन के जवाब दीं।

मितऊ देहला न जगाय, निंदिया बैरिन भैली ।। टेक ।।
की तो जागै रोगी भोगी, की चाकर की चोर,
की तो जागै संत विरहिया, भजन गुरु के होय ।। 1 ।।
स्वारथ लागि सभै मिलि जागै, बिन स्वारथ ना कोय,
परस्वारथ को वह नर जागै, जापर किरपा गुरु की होय ।। 2 ।।
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय,
ग्यान खड़ग लिये पलटू जागै, होनी होय सो होय ।। 3 ।।

सवाल

1. ऊपर के पद केकर लिखल ह ? बताईं ?
2. दीहल पद्य के भाव अपना शब्द में लिखीं।
3. पद्य के अपना वर्ग के साथियन के साथ सामूहिक पाठ करीं।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

शब्द भंडार

बैरिन	-	दुश्मन
मितऊ	-	मित, मित्र
चाकर	-	चाकरी करेवाला, नौकर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - दू

गुलाल साहेब

गुलाल साहेब के जनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला के भरकुड़ा गाँव के एगो संपन्न खत्री परिवार में भइल रहे। इहाँ के जीवनकाल के बारे में विद्वानन का बीचे मतैक्य नइखे। तबहूँ एगो समय जेकरे सभे मानल ऊ सन् 1693 ई० से सन् 1743 ई० (सं०-1750 से 1800) बा। अपना सेवक बुल्लेशाह में ईश्वरीय सत्ता के प्रत्यक्ष प्रमाण देखे के उनका के आपन गुरु मान लिहले।

गुलाल साहेब, यारी साहब के शिष्य परंपरा के विशिष्ट संत रहले। इनका रचनन में एक ओर जहाँ अनहद नाद, विनय, भेदाभेद, आ माया-ब्रह्म के व्याख्या कइल गइल बा त दोसरा ओर भगवत् प्रेम के सुंदर आ मनोहारी चित्र उरेहल गइल बा। साँच पूछीं त प्रेम रस त अद्भुत होला। एह रस के तुलना ना कइल जा सके। जब आदमी प्रेम रस में डूब जाला त ओकरा खातिर सबकुछ तुच्छ हो जाला। आ एकर रस जब आदमी के मिल जाला तब ओकरा अउर कुछ अच्छा ना लागे। आ ई तबे संभव हो पावेला जब गुरु के किरिपा होला।

गुलाल साहेब अपना पदन के माध्यम से जीवन, ब्रह्म आ माया के भेद बतावत अंतर्मुखी साधना पर जोर देले बाड़न आ सामाजिक आडंबर पर करारा प्रहार कइले बाड़न।

विषय प्रवेश

संग्रह में संकलित पद ब्रह्म के व्याख्या करत लोगन के समझवले बानीं कि 'राम' त हर आदमी के भीतर बाड़ें। उनका के कहीं खोजे के जरूरत नइखे। पद के माध्यम से गुलाल साहेब पाखंडी लोगन के उपर व्यंग्य करत कहत बाड़न कि पाथर पूजला आ तरह-तरह के भेष बनाके घुमला से राम ना मिलिहें। आदमी असहीं मिरिगा अइसन मिरिगजल के पीछे धउरत फिरी, एह से अच्छा बा कि आदमी अपना भीतरे के राम के पहचानो ना त जमपुर जाहीं के बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

1. पद

तन में राम और कित जाय ।
घर बैठल भेंटल रघुराय ।।1।।

जोगि जती बहु भेख बनावें ।
आपन मनुवाँ नहिं समुझावे ।।2।।

पूजहिं पत्थल जल को ध्यान ।
खोजत घूरहिं कहत पिसान ।।3।।

आसा तृस्ना करें न थोर ।
सुविधा मालत फिरत सरीर ।।4।।

लोक पुजावहिं घर-घर धाय ।
दोजख कारन भिस्त गँवाय ।।5।।

सुन नर नाग मनुष औतार ।
बिनु हरि भजन न पावहिं पार ।।6।।

कारन धै धै रहत भुलाय ।
तातें फिर फिर नकर समाय ।।7।।

अबकी बेर जो जानहु भाई ।
अवधि बिते कछु हाथ न आई ।।8।।

सदा सुखद निज जानहु राम ।
कह गुलाल न तो जमपुर धाम ।।9।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. पद

मन तूँ हरि गुन काहे न गावै ।
तातें कोटिन जनम गँवावै ॥

घर में अमृत छोड़ि कै, फिरि फिरि मदिरा पावै ।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु, बहुरि न ऐसो दावै ॥

पाँच पचीस नगर के बासी, तिनहिं लिये संग धावै ।
बिन पर उड़त रहै निसि बासर, ठौर ठिकान न आवै ॥

जोगी जती तपी निर्बानी, कपि ज्यों बाँधि नचावै ।
सन्यासी बैरागी मौनी, धै धै नरक मिलावै ॥

अबकी बार दास है मेरो, छोड़ों न राम दुहाई ।
जन गुलाल अवधूत फकीरा, राखो जंजीर भराई ॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गुलाल साहेब के जनम कहाँ भइल रहे ?
2. कवि केकरा से हरिगुन गावे के कहत बाड़न ?
3. कवि केकरा के सदा सुखद मानत बाड़न ?

4. कवि केकर ध्यान करे के कहत बाड़न -

(क) मंदिर में स्थापित मूरत के
(ख) जवना साधु के खूब प्रशंसा मिलत होखे
(ग) जेकर पूजा कहला से सांसारिक सुख मिले
(घ) घर घर में निवास करेवाला ब्रह्म के

5. ब्रह्म के कहाँ से प्राप्त कइल जाई -

(क) मंदिर में पूजा कइला से
(ख) माला जाप कइला से
(ग) घर बार छोड़के साधु बन गइला से
(घ) अन्तर्मुखी होके ब्रह्म के ध्यान कइला से

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ब्रह्म प्राप्ति खातिर कवि का उपाय बतावत बाड़न ?
2. भेष बनाके संसार में प्रतिष्ठा पवला से मुक्ति ना मिले के का कारन बाड़न ?
3. जोगी जती लोग के बानर लेखा नाचे के का कारन बा ?

ABDIE PUBLICATIONS ABSOL PATNA

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पदन के आधार पर गुलाल साहेब के साधना पद्धति पर प्रकाश डालीं।
2. "गुलाल साहेब के रचना में निर्गुण ब्रह्म के व्याख्या कइल गइल बा।" सिद्ध करीं।

सप्रसंग व्याख्या

दूनो पद के

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भाषा अध्ययन

1. नीचे लिखल शब्दन के तत्सम रूप लिखीं -

(क) जती
(ख) मनुवाँ
(ग) भेख
(घ) तपीं

परियोजना कार्य

1. रउआ गाँव जवार में कवनो संत महात्मा भइल होखस, त उन्हुकर जीवनी लिखीं।
2. अपना जिला के कवनो ऐतिहासिक स्थल के इतिहास आ वर्तमान पर प्रकाश डालीं।
3. कबीर दास के पद से पठित पदन के मिलान करीं।

1 मन तूं हरि गुन काहे न गावै।
2. तन में राम और कित जाय।

शब्द भंडार - 1

कोटिन	-	करोड़न (करोड़ो)
पाँच पचीस	-	देह के तत्व
निसि वासर	-	रात दिन
ठौर ठिकान	-	स्थाई जगह
कपि	-	बानर
दाव	-	पारीं

शब्द भंडार - 2

कित	-	कहाँ
भेंटल	-	भेंट भइल
भेख	-	सरूप
धूरहिं	-	धूल
पिसान	-	आँटा
मातल	-	मदमस्त
दोजख	-	नरक (भूख)
भिस्त	-	कीमती शरीर
धै धै	-	दउरत दउरत
जमपुर	-	नरक

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाठ से बाहर के चीज

नीचे दिहल पद्य पढ़ के सवालन के जवाब दीं।

"कँवल से भँवरा बिछुड़ल हो,
जहँ कोई न हमार ॥ 1 ॥
भौजल नदिया भयावन हो,
बिन जल कै धार ॥ 2 ॥
ना देखूं नाव न बेड़ा हो,
कइसे उतरब पार ॥ 3 ॥
सत्त के नैया सिर्जावल हो,
सुकिरत करि चार ॥ 4 ॥
गुरु के सबद के नहरिया हो,
खेई उतरब पार ॥ 5 ॥
दास कबीर निरगुन गावल हो,
संत करहुँ विचार ॥ 6 ॥

सवाल

1. ऊपर के लिखल निरगुन केकर ह ?
2. निरगुन के भाव अपना शब्द में लिखीं।
3. साथी के साथ मिल के गाईं।

शब्द भंडार

कँवल - नाभि कमल
भँवरा - जीव
सुकिरत - गुरु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - तीन

कालिदास

कालिदास संस्कृत साहित्य के महाकवि आ, महान नाटककार के रूप में स्थापित बानीं। इहां के जीवनकाल के बारे में विद्वानन के बीच काफी मतभेद बा, तबो अधिकांश विद्वान लोग काफी तर्क-वितर्क के बाद ईसा पूर्व पहली शताब्दी में इहां के समय निर्धारित कइले बा। महाकवि कालिदास के काव्यन में प्रकृति के मोहक आ हृदयहारी चित्रण भइल बा। इहां के बारे में कहल जाला कि ''उपमा कालिदासस्य''। यानि उपमा के जेतना सटिक प्रयोग महाकवि कालिदास के काव्यन में भइल बा ऊ अन्यत्र दुर्लभ बा।

इहाँ के दूगो महाकाव्य - कुमार संभवम् आ रघुवंशम्, तीन गो नाटक - अभिज्ञान शांकुतलम, विक्रमोर्वशीयम् आ मालविकाग्नि मित्रम, अउरी दूगो खण्ड काव्य - ऋतु-संहार आ मेघदूतम् में काव्यकला के मनमोहक चमत्कार देखे जोग बा। महाकवि कालिदास के काव्यन में अलंकार योजना, छन्द विधान, रस योजना, शब्द विन्यास आदि के अतना स्वाभाविक प्रयोग कइल गइल बा कि ऊ विश्व साहित्य के धरोहर बन गइल बा। आज महाकवि कालिदास के रचनन के कईगो भाषा में अनुवाद हो गइल बा। आजो सहृदयन के हृदय के आह्लादित कर रहल बा।

मानल जाला कि महाकवि उपमा देवे में बेजोड़ बाड़न-'उपमा कालिदासस्य'। एह अनुवादो में 'सहृदय' जी मूल कवि के एह विशेषता के बनवले रखले बानी।

अनुवादक - हबलदार त्रिपाठी 'सहृदय' -

रोहतास जिला के काराकाट प्रखण्ड के अन्तर्गत मानिक परासी गाँव में जनमल सहृदय जी के साहित्यिक क्षेत्र में काफी महत्त्वपूर्ण स्थान बा। शशि दर्शन, बौद्ध धर्म और बिहार, बिहार की नदियाँ तीन भाग में लिखके इहां के आपन मौलिक आ शोधपरक दृष्टि के परिचय देलीं। दशकुमार चरित के हिंदी अनुवाद आ मेघदूतम के भोजपुरी अनुवाद से इहों के काफी ख्याति मिलल। कई गो पत्र-पत्रिकन आ किताबन के संपादन के अलावा इहाँ के हिंदी आ भोजपुरी अकादमी के पहिला निदेशक के रूप में सहृदय जी भोजपुरी के एगो नया आयाम दिहलीं। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद आ अन्य साहित्यिक संस्थन के ओर से इहाँ के सम्मानित कइल गइल। कुल मिलाके साहित्य आ संस्कृति के क्षेत्र में सहृदय जी के महत्त्वपूर्ण स्थान रहल बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

विषय प्रवेश

मेघदूतम संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास द्वारा मंदाक्रान्ता छंद में विरचित एगो मार्मिक खण्ड काव्य ह। हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जी एह मार्मिक विरह काव्य के भोजपुरी के बिरहा छन्द में अनुवाद कइले बानी, जवना के आरम्भिक पाँच गो छंद एह संकलन में संकलित बा। अलकापुरी के धनपति कुबेर के एगो यक्ष शापवश अपना प्रियतमा से दूर रामगिरि पर्वत पर जीवनयापन करे खातिर विवश हो जाता। एह बीच में ओह विरही यक्ष के अपना पत्नी के इयाद तड़पावत बा, बाकिर बरसात के आरंभिक माह अषाढ़ के चढ़ते ओकर विरह ज्वाला धधके लागल। ऊ अपना पत्नी के पास संदेश भेजल चाहता, बाकिर ओहिजा एकांतवासी यक्ष के केहू मिलते नइखे, जेकरा से आपन संदेश भेज सको। ओही घरी विरह के ताप के बढ़ावे वाला मेघ आसमान में घुमड़े लागल। लाचार यक्ष ओही मेघ के निहोरा कके, अपना पत्नी के पास संदेशवाहक के रूप में भेजे के कोशिश करता। ऊ मेघ से रास्ता के बारे बतावे के क्रम में प्रकृति चित्रण, सौंदर्य चित्रण आ विरहीमन के मनोदशा के बारे में मार्मिक चित्र उपस्थित करत बा, जवन विश्वस्तरीय विरह काव्यन में आपन विशिष्ट स्थान राखता।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पूर्व मेघ

: 1 :

अपने करनिआँ के चुकवा से एगो जच्छ धनिआँ के सहेला बियोग
सामी के सरपवा से बल-बुधि-तेज खोइ भोगता बरिस भर के भोग ।
सीता के नहइला से जहवाँ के जल शुद्ध, जहाँ जूड़-धन रूख-छांह
रहता बियोगिआ ऊ ओहि रामगिरि परबतवा के कुटिअन माँह ।।

: 2 :

प्यारी से बिछुड़ि ओहि गिरिआ प कामी जच्छ खेपलस कुछ दिन मास
सोनवाँ के बेरवा बहल हंथवा से ओह जच्छवा के गटवा उदास ।
पहिला असारह दिने गिरि के कगरवा में लउकल बदरा फफाध
देखे जोग खेलवा करत जइसे ढूहवा में हथिआ माँजत होखे दाँत।।

: 3 :

लालसा जगावेवाला मेघवा के अगवा में कसहूँ ठहरि, हो विभोर
देरतक सोचत कुबेरजी के सेबका के अँखिअन में भरि अइले लोर ।
गरवा लिपटि रहे प्यारी आ पिअरवा जे सेहू देखि बदरी हहाय
जेहि के सनेहिआ रहेले दूर देसवा ओकर दुख कइसे कहाय ।।

: 4 :

ढूढ़ेला ऊ जच्छ नगिचाइल सवनवाँ में धनिआँ के जीए के अधार
अपना कुसल के सनेसवा त मेघवा से कइलस भेजेला विचार ।
दिहलस कुटजवा के टअका कुसुमबन से मेघ के अरघ उपहार
नेह में बोरल खुस होई के कढ़वलस स्वागत-वचन मनुहार ।।

: 5 :

कहाँ धुआँ-हवा-पानी-धूपवा के मिलला से बनेला बदरवा के भेख
कहवाँ सनेस लेइ जाये जोग चाहेला चतुर-चेतनउग सरेख ।
जच्छ ई विचार तेजि मेघ से गरज बस करेला अरज हो बेहाल
काम से आरत मतिभरठा त जाने नाहिं जड़वा-चेतनवाँ के हाल ।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. केकरा गलती के कारण वियोगी दंड भोगता?

(क) आपन (ख) पत्नी के (ग) मलिक के (घ) कवनो के ना

2. 'मेघदूत' में वियोगी के बा ?

(क) यक्ष (ख) कुबेर (ग) हवा (घ) मेघ

3. यक्ष कवन सनेस मेघ के जरिये देबे के चाहत बारे -

(क) अपना आवे के (ख) आपन दुख के

(ग) कुबेर के निठुराई के (घ) आपन कुशता के

4. यक्ष के दंडस्वरूप कवना परवत पर रहे के रहे -

(क) रामगिरि (ख) हिमालय (ग) नंदा देवी (घ) विन्ध्याचल पर्वत

5. असाढ़ के पहिलका दिने यक्ष के परवन पर का लउकल ?

(क) बदरा (ख) जल (ग) हवा (घ) हाथी

6. कालीदास के 'मेघदूतम्' के भोजपुरी अनुवादक के का नाँव बा ?

7. वियोगी यक्ष केकर सेवक रहले ?

8. धुआँ, हवा, पानी-धूप मिल के का बनेला ?

9. काम से आरत मति भ्रष्ठ के वा ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मेघदूत में के मेघ के मानवीकरण क के आपन सनेस भेज रहल बा ?
2. मेघ के देख के प्रकृति में, पशु-पक्षी में, कवन परिवर्तन होला आ का भाव जागेला ?
3. मेघ का आगा ठहरला पर यक्ष का विभोर भइला पर का भइल ?
4. दीहल गइल शब्द-भंडार में से पाँच गो संज्ञा शब्द चुन के ओकर सर्वनाम लिखीं।
5. पढ़ल पदन के आधार पर एगो संक्षिप्त टिप्पणी लिखीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कालिदास के परिचय लिखीं।
2. अनुवाद कला के बारे में बताई।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

परियोजना कार्य

1. कवनो भोजपुरी कविता, कहानी के हिन्दी भा दोसरा कवनों भाषा में अनुवाद करीं।
2. हिन्दी के कवनो प्रसंग के भोजपुरी में अनुवाद करीं।

शब्द भंडार

सामी	-	मलिकार
जूड़-धन	-	बादल के छाँह
रूख-छाँह	-	गाछ के छाँह
कामी	-	जे काम से ग्रसित होखे
बेरवा	-	बेड़ा (एगो गहना जे हाथ में पेन्हल जाला)
गटवा	-	गाटा (कलाई)
कगरवा	-	किनारे
फफान	-	उफनत
ढूहवा	-	टिल्हा
नगिचाइल	-	नजदीक आइल, नियराइल
सनेसवा	-	समाचार, सन्देश
कुटजवा	-	कुटज (एगो फूल के पौधा)
टटका	-	ताजा
अरध	-	जल भा फूल अर्पित कइल
मनुहार	-	निहोरा, मनउवल
चेतनउग	-	चेतनगर
सरेख	-	समान
मतिभरठा	-	जेकल मति खराब (भरठ) हो गइल होखे

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - चार

आल्हा - ऊदल

ई भोजपुरी इलाका के लोकप्रिय लोकगाथा ह। आल्हा-ऊदल के नाँव सुनते बूढ़-जवान सभके भुजा फड़के लागेला। भोजपुरिया लोग वीर होला। इहे वजह बा कि गैर-भोजपुरी इलाका के ई कथा एजवा के लोग के खूब धरलस आ सभे एकरा के आपन कंठहार बना लेलस। वीरे आदमी प्रेम करेला आ जरूरत पड़ला पर ओकरा खातिर आपन बलिदान देला। आल्हा-ऊदल के गाथा भी अइसने वीर के कथा ह।

आल्हा-ऊदल राजा परमाल के सेना में रहस बाकिर अपना वीरतापूर्ण करनामा का चलते लोगन का नजर में राजा से अधिका सम्मान पवले।

विषय प्रवेश

एह पाठ में संकलित अंश आल्हा-ऊदल लोकगाथा के आल्हा खंड से लिहल गइल बा, जवना में आल्हा के बिआह के पहले के तइयारी आ नैनागढ़ में ओह खातिर भइल लड़ाई के चरचा बा। शुरू के अंश में आल्हा के कचहरी आ आल्हा-ऊदल के संवाद बा। बाद वाला अंश नैनागढ़ के लड़ाई के तइयारी आ लड़ाई से संबंधित बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आल्हा के बियाह

रामा लागल कचहरी जब आल्हा के बंगला बड़ बड़ बबुआन
लागल कचहरी उज्जैन के दरबार
सात मन का कुंडी दस मन का घुरना लाग
ओहि समन्तर ऊदल पहुंचल बँगला में पहुंचल जाए
देखि के सूरत ऊदल के आल्हा मन में करे गुमान
देहियाँ देखो तोर धूमिल मुंहवा देखो उदास
कौन सकेला तोर पड़ गइल बाबू कौन अइसन गाढ़
भेद बतावा तू जियरा के कइसे बूझे प्रान हमार

अरे त हाथ जोड़ के ऊदल बोलल भइया सुन धरम के बात
पड़ि सकेला है देहन पर बड़का भाइ बात बनाव
पूरब मरलों पुर पाटन में जे दिन सात खंड नैपाल
पच्छिम मरलों बदम लहोर दक्खिन बिरिन पहाड़
चारि मुलकवा खोजी अइलीं कतहीं न जोड़ी मिले कुंआर
कनिया जामल नैनागढ़ में राजा इन्दरमल के दरबार
बेटी रूप सयानी समदेवा के वर माँगल बाँध जुआर
बड़ लालसा हवे जियरा में जो भइया करौ बियाह सोनवा से
लागल लड़ाई नैनागढ़ में घोड़ा चला हमारे साथ

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एतना बोली घोड़ा सुन गइल घोड़ा जरि के भइल अंगार
बोलल घोड़ा डेबा से बाबू डेबा के बलि जाओ
कज्जर पड़ि गइल आल्हा पर ओपर गिरे गजब के धार
जब से अइलों इंद्रासन से तब से बिपत भइल हमार
पिल्लू बिसाइल बा खूरन में ढालन में झाला लाग
मुरचा लागि गइल तरवारन में जग में डूब गइल तलवार
आल्हा लडइया कबहो न देखल जग में जीवन है दिनचार
अतना बोली डेबा सुन गइल डेबा खुशी मगन होइ जाय
खोले अगाडी खोले पिछाडी खोले सोनन के लगाम
पीठ ठोक के जब धौडा के घोडा सदा रहौ कलियान
चलल जे राजा ब्रहमन भुडबेनुल चलल बनाय
घडी अढ़ाई आ अंतर में ऊदल कन पहुँचल जाय
देखिके सुरतिया बेंदुल के रूदल हसके कहल जवाब
हाथ जोड़ के ऊदल बोलल घोड़ा सुनले बात हमार

भूजे डंड पर तिलक बिराजे परतापी ऊदल बीर
फाँद बछेडा पर चढ़ गइल घोडा पर भइल असवार
घोड़ा बेनुलिया पर बावे ऊदल घोडा हंसा पर डेबा बीर
दुइए घोड़ा दुइए राजा नैनागढ चलल बनाय
मारल चाबुक है घोडा के घोडा [illegible] डारे पाँव
उड़ि गइल घोड़ा सरग चलि गइल घोड़ा चला बराबर जाय
रिमझिम रिमझिम घोडा नाचे जैसे नाचे जंगल मोर
रात दिन का [illegible] में नैनागढ [illegible] तफाय
देखि फुलवारी सोनवा के रूदल [illegible] मगन होय जाय
(सत्यव्रत सिन्हा के 'भोजपुरी लोक गाथा' पुस्तक से साभार)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ

1. अल्हा-रूदल के लड़ाई कहाँ भइल रहे ?
2. रूदल के घोड़ा के नाँव का रहे ?
3. केकरा फुलवारी देख के रूदल मगन हो गइल रहले ?
4. घोड़ा जरि के अंगार काहे भइल रहे ?
5. मुरचा कहँवा लागल रहे ?
6. कविता के देल गइल अंश कवना तरह के कविता बा ?

   (क) हास्य-रस (ख) शृंगार- रस (ग) वैचारिक (घ) वीर-रस
7. सोनवाँ केकर बेटी रहे ?
8. राजा इनरमन कहाँ के राजा रहले ?
9. घोड़ प चढ़ के रूदल कहँवा गइल रहे ?

   (क) रामगढ़ (ख) छत्तीसगढ़ (ग) नैनागढ़ (घ) आजमगढ़
10. कचहरी केकरा दरबार में लागल रहे ?

लघु उत्तरीय

1. अल्हा-रूदल के बीच में कवन संबंध रहे ?
2. घोड़ा केकरा से बलि खातिर कहलस ?
3. सोनवाँ से केकर बिआह होखे के रहे ?
4. रूदल अल्हा से कवना बात खातिर विनती कइले रहे ?
5. अल्हा केकर सूरत देख के गुमान करत रहले ?

दीर्घ उत्तरीय

1. दिहल गइल कविता के अंश के भाव अपना भाषा में लिखीं।

परियोजना कार्य

1. अल्हा-रूदल के कथा केहू से पूछ के लिखीं।
2. कवनो वीर-रस के कविता अपना कॉपी में लिख के कक्षा में साथियन के साथे पाठ करीं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्द भंडार

अंगार	-	धधकत आग के टुकड़ा
विपत	-	भारी दुख
वज्जर	-	बज्र
खूर	-	पशु के पैर के अगिला भाग, नाखून
मगन	-	मस्त
अगाड़ी	-	आगे
पिछाड़ी	-	पाछे
बिराजे	-	बइठे
असवार	-	सवारी करे वाला
सरग	-	स्वर्ग

पाठ से बहरी के सवाल

(1) रउआ अगल-बगल कँहू लोकगाथा गावे वाला होखे त ओकरा से कवनो लोकगाथा पर आधारित कविता सुन के लिखीं।

ABSOL SOLUTIONS PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - पाँच

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव

बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव के जनम पूर्वी चंपारण के गोविन्दगंज थाना के नगदाहाँ गाँव में सन् 1906 ई० में भइल रहे। इहाँ के शिक्षा गाँव आ मोतिहारी में भइल। जीविका खातिर इहाँ के शुरू में शिक्षक बननी आ फेर पत्रकारिता कइलीं।

बलदेव बाबू हास्य-व्यंग्य के कवि रहीं। इहाँ के गाँव-गवंई से प्रतीक-बिम्ब उठवले बानी. जवन पाठक के मरम के बेधता। इहाँ के कविता 'सुनीं-सुनाई कथा आज चम्पारण के गाँव के' उद्‌बोधन गीत खानी लोकप्रिय भइल। इहाँ के प्रकाशित किताब बाड़ी सन - 'चंपारण के गीत', 'वतन का तराना', 'वृक्ष रक्षा सम्मेलन', 'चंद्रिका पाण्डेय व्यक्ति और व्यक्तित्व।'

इहाँ के मउवत 26 अगस्त सन् 1985 ई० के हो गइल।

विषय प्रवेश

प्रस्तुत कविता में दलित जीवन के दु:ख भरल कथा कहल गइल बा। सामाजिक व्यवस्था के न्यायपूर्ण बनावे खातिर ई जरूरी बा कि जातिगत भेदभाव खतम कइल जाव। ई कविता दलित वर्ग के प्रति होखे वाला भेदभाव के ओरवावे के प्रेरणा देता। दलित वर्ग के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से लिखल गइल ई कविता बतावता कि उच्च कोटि के कलाकार वर्ग के जाति के नाँव पर सतावल ठीक नइखे।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हिनुए नू बानी

'गँवई का बाहर बगइचा का पास में
एकनी के घर ना खोभार बाटे बाँस में
जिनगी भर जनलस ना कुँआ के पानी
तेहू पर कहेला हिनुए नू बानी
सुअर के साथी ई सूअरो से बदतर
कुकुरो ना करिहें स एकनी के परतर
नीमन से धोअल ई कपड़ा ना जाने
बाते सफाई के मन में ना आने।
बाबू का बेटी का सादी का बेरा
भोरे से दुअरा लगवले से ई डेरा
धइलस ई दउरा में पत्तल बिटोर के
कउआ आ कुकुर से छीन के आ छोर के
अठवरन ई जूठे पर कइलस गुजारा
कफन के कपड़ा बा एकर सहारा
मालूम ना एकनी का कइसे सहाला
गरमी के गरमी आ जाड़ा के पाला
जुग-जुग के मारल सतावल धरम के
रोएला भकुहा ई अपना करम के
एकेगो मड़ई में परिवार भर के
सूतेला एके में गोड़-मुड़ कर के
कबहीं ना घर ई बनवले स फरके
गँवई के ई होखे चाहे शहर के
पीएला गड़हा ओ गुड़ही के पानी
मइले अँगवछा में सतुआ ई सानी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दोसरा के मइला ई फेंकेला पागल
मड़ई में एकरा गलीजे बा लागल
कहियो ना अभिमान जीवन में जागल
कहियो ना मनसा से भय-भूत भागल
बाबू के दुअरा बहारेला रोजो
नइखे मन में कि अपना के खोजो
कहिया ले सुतबे, खड़ा तनि हो जो
गइल पन्थ आगे दउर तेहूँ जो जो।
डगरा में रच दी कमल-फूल पत्ती
बारी ना घर में कबो तेल-बत्ती
सिक्षा बजा के जगत के जगवलस
भय-भूत भारत का मन से भगवलस
अपना के अइसे ई कइसे बनवलस
दुनिया बदल ई कदम ना बढ़वलस
मुँह एकर कता से कादो चिरल बा
उलटा विधाता बा कइसन फिरल बा
होके कलाकार बेबस घिरल बा
गड़हा गरीबी में गव से गिरल बा
मड़ई में एकरा अमावस रहेला
आन्हर अन्हेरा के कइसे सहेला!
कवन ह, कहाँ बा, कहाँ ले ई जाई?
बुद्धू, बहादुर के, के ई बुझाई?
जनबे ना कइलस पढ़ाई-लिखाइ
के शंख फूँकी आ कहिया जगाइ?
रे छोड़ रउरो कहइहें स कहिया,
कहिया कहइहें स बाबू ओ भइया!

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'हिनुए नू बानी' कवना विधा के रचना ह ?
2. 'हिनुए नू बानी' शीर्षक कविता के रचनाकार के ह ?
3. 'जुग-जुग के मारल सतावल धरम कें' - एह पंक्ति में कवि 'सतावल धरम कें' के माध्यम से का कहे के चाहता ?
   (क) दलित लोग के साथे धरम में भेदभाव कइल बा।
   (ख) दलित लोग के साथे धरम में भेदभाव नइखे कइल गइल।
   (ग) दलित लोग के स्थिति के धरम से कवनो संबंध नइखे।
   (घ) कुछो ना।
4. 'सिंघा बजा के जगत के जगवलस' - एह पंक्ति के अर्थ बा -
   (क) सुतला से जगवला के (ख) गीत गावल
   (ग) दुनिया के सजग आ सचेत कइल (घ) कवनो ना
5. बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव कहाँ के रहे वाला रहीं ?
   (क) सासाराम (ख) सीवान (ग) आरा (घ) चंपारण
6. 'जिनगी भर जनलस ना कुँआ के पानी, तेहू पर कहेला हिनुए नू बानी' - एह पंक्तियन के माध्यम से कवि कहे के चाहता -
   (क) हिन्दू धर्म के भेदभाव का बादो दलित हिन्दूए धर्म मानतारे
   (ख) दलित अपना के हिन्दू नइखन मानत
   (ग) दलित कुँआ के पानी ना पियले रहे
   (घ) कवनो ना

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'होके कलाकार बेबस घिरल बा' - एह पंक्ति के आधार पर भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निरर्थकता पर प्रकाश डालीं।
2. गरीब आदमी अपना परिवार का संगे कँगन रहेला ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'पठित कविता में दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति के स्वर मुखर भइल बा।' – एह कथन के समीक्षा करीं।
2. 'हिनुए नू बानी' कविता के अभिधात्मकता एकर प्राण तत्व बा।' – एह कथन के स्पष्ट करीं।
3. ई कविता पढ़ला के बाद कवना तरह के भाव मन में जागता आउर कवना रस के संचार होता ?

शब्द भंडार

खोभार – सूअर के रहेवाल सकेत गन्दा घर
अठवरन – आठो पहर, हरदम
भकुआ – जेकरा कुछ ना बुझाय
सिंघा – एगो बाजा, जे बिआह आदि शुभ काम में मुँह से फूकल जाला
कत्ता – एगो लोहा के हथियार जे से बांस, लकड़ी काटल जाला
गलीजें – सड़ल गलल महकत गंदगी
डगरा – बांस के बनल एगो गोलाकार चीज जे से अनाज फटकारल, डगरावल जाला
गच – एकाएक गिरला के एगो आवाज
परतर – बराबरी
भकुहा – भकुआइल रहेवाला, बुरबक

2. एक शब्द दीं –

(जइसे–जहवाँ बहुते आम के गाछ होखे – अमवारी)
जहवाँ ढेर बाँस एके संगे होए –
जहवाँ तरे-तरे के फूल के पौधा होखे –

3. कविता पढ़ के सात गो संज्ञा पद चुनीं। जइसे –

बाँस, बगइचा, पानी, सूअर, कपड़ा, मड़ई, अँगवछा
सतुआ, डगरा, सिंघा, गरीबी, गड़हा, अन्हेरा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रचनात्मक अभिव्यक्ति

1. हिन्दी कवि पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी के कविता 'भिक्षुक' आ 'तोड़ती पत्थर' के संकलन करीं आ 'दलित' शीर्षक कविता से तुलनात्मक अध्ययन करीं।
2. कविता में वर्णित दलित-जीवन आ आज के समय में एह जातियन के जीवन स्तर में का सुधार आइल बा - तुलनात्मक वर्णन करीं।

परियोजना कार्य

1. अपना गाँव-टोला में घूम फिर के ध्यान से देखीं आ बतलाईं -
   (क) का सभ लोग आपुस में सहयोग करत बा ?
   (ख) का सभे जातियन के सामाजिक आ माली हालत नीमन बा ?
   (ग) छुआछूत आ भेदभाव अबहियों पहिले खानी बा ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - छव

सिपाही सिंह श्रीमन्त

सिपाही सिंह श्रीमन्त के जन्म 8 मई 1923 ई० के बिहार के गोपालगंज जिला में गंडक का किछार पर एगो ठेठ भोजपुरिया गाँव मूंजा (बैकुंठपुर) में भइल रहे आ साँचहूँ इहाँ का एगो जुझारू सिपाही खानी भोजपुरी आंदोलन के आगे बढ़ावे में आपन जिनगी खपा दिहलीं। स्कूले में पढ़त रहीं त इहाँ का भारत छोड़ो आंदोलन में कूद के आपन देश भक्ति के परिचय देले रहीं। बाद में एम० ए०, एम० एड० तक शिक्षा ग्रहण कइलीं आ शिक्षा विभाग में कई गो पद पर पदाधिकारी के रूप में कार्य कइलीं। साहित्य सृजन के काम इहाँ का विद्यार्थी जीवन से ही करे के शुरू कइलीं। हिन्दी आ भोजपुरी दूनो भाषा में इहाँ का लिखत रहीं। 'उषा रानी' (1950) इनकर पहिल भोजपुरी कविता-संग्रह प्रकाशित भइल। ओकरा बाद 'आँधी' (1953) 'हीरा मोती' (1972), 'जवानी के जगाइले' (1973) कविता संग्रह आइल। उहाँ का गद्य विधा में कहानी, निबंध आदि पर आपन कलम चलइलीं। 'प्रतिनिधि कहानी भोजपुरी के' (1977) आ 'भोजपुरी निबंध निकुंज' (1977) का साथे अनेक हिंदी भोजपुरी पत्र-पत्रिका के संपादन से इहाँ का जुड़ल रहीं। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के साहित्य मंत्री, महामंत्री, भोजपुरी अकादमी के कार्य समिति-सदस्य, प्रगतिशील लेखक संघ के सक्रिय सदस्य का रूप में साहित्यिक आंदोलन में इनकर योगदान भुलाइल ना जा सकेला। 15 जनवरी, 1980 के इहाँ के निधन भ गइल ओकरा बाद उनकर शोध पूर्ण ग्रंथ 'थरूहट के लोकगीत' प्रकाशित भइल आ 'गीतांजली' के भोजपुरी अनुवाद अबहूँ प्रकाशन के बाट जोह रहल बा।

विषय प्रवेश

'आँधी' कविता में आँधी क्रान्ति के प्रतीक बिया। विषमता के खिलाफ बिगुल फूंकत कवि एह कविता में रूढ़िवादी विचारधारा, पूँजीवादी-सामंती व्यवस्था, सामाजिक कुव्यवस्था, शोषण-उत्पीड़न के विनाश के निमंत्रण देत परिवर्तन आ नवनिर्माण के आह्वान करत बिया।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आँधी

गूमसूम-गूमसूम तनिको ना भावे हमें
आँधी हई आँधी, अंधाधुंध हम मचाइले
नास लेके आइले, कि नया निरमान होखो
नया भीत उठेला, पुरान भीत ढाहिले।
ढाहिले पुरान, जीर्ण-शीर्ण के झकोरा मार
बुढ़िया सम्हारे तले ढाह ढिमिलाइले
नइकी पतइयन के दुनिया सँवारेला
पाकल पतइयन के भुँई भहराइले।
कोठा वो अमारी सातखंड में लुका के सूते
ओकरो करेजवा में कँपनी ढुकाइले
कोठा का जे चारू ओर हाहाकार उठे
ओमें कोठा के गिरावेवाला बल, ई बताइले।
सुविधा सहोट के जे बइठल कंगूरा पर
कलसा गुमानी लो के मुड़िया ठेंठाइले
हो-हो क-के, हू-हू क-के, दउर-दउर बार-बार
मार के निछोहे गर्वे चसकल छोड़ाइले।
बइठ के निचिन्त हरियरी का अलोता जे
रात-दिन खाली चोंटिए सँवारेले
अइसन पहाड़ लो के टीकवे उखाड़ ली-ले
मार के झकोरा उनुकर बबुरी बिगाड़िले।
बड़-ऊँच लमहर रोके के जे राह चाहे
ओह लो का हस्ती के माटी में मिलाइले
छोटे-छोटे, हलुक-हलुक, नन्हीं-नन्हीं मिले
ओके गोदी में उठा के, आसमान में खेलाइले।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

केहू के उठाइले, गिराइले केहू के हम,
आँधी हईं आँधी, अंधाधुंध हम मचाइले
घेर आसमान के अन्हार घोर घटा करे
फूँक-फाँक रूई लेखा ओको उड़िआइले।
बइठल-बइठल धरती के रस चूस
चूस जिएवाला लो के आँख पर चढ़ाइले
भारी-भारी मोट-मोट, ढेर-ढेर पत्तावाला
गाछ लो का फुनुगी के माटी में सटाइले।
छतिया उतान क-के, मन में गुमान क-के
नवे के ना चाहे, ओके दूर से ठिकाइले
किनहूँ के घेंट धा से मुंड़िए अँईठ दिले
किनहूँ के साफ जर-सोर से गिराइले।
दिन-रात लात से जे सभे दरमसे, ओहू
धुस-खरपात में भी जिनगी लगाइले
नीचा रहेवाला लो के नीचा से उठाइले
त बड़-बड़ ऊँच लो का मूड़ी पर चढ़ाइले।
रुख हमर देख-देख दूभ लेखा काम करे
सिरवा नवावे ओके कुछ ना बिगाड़िले
अईठल-अँकड़ल राह रोक खड़ा होखे
खाली हम ओही लो के चिन्ह के उजाड़िले।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्रीमंत जी के घर कवना जिला में रहे ?
2. 'आँधी' कविता के मूल स्वर का बा ?
3. कवि आपन उपमा केकरा से करत बा ?

(क) तूफान (ख) आँधी (ग) भूकम्प (घ) झकोर

4. कविता के एह पंक्ति के पूरा करीं -

'नया भीत उठेला ..... भीत ढाहिले।

5. पाकल पतई कहाँ भहरात रहे ?

(क) आकाश (ख) पाताल (ग) एने-ओने (घ) भूँइया

6. भारी-भारी मोट गाछ आ धुरा-खरपात कह के कवि केकरा ओर संकेत कर रहल बा ?
7. आँधी कविता में कवि काहे नाश ले के आवे के बात कहत बा ?
8. सही पर (✓) चिह्न लगाईं -

(क) नइकी पतइयन के दुनिया सँवारेला

(i) नया पता सजावेला

(ii) नया विचार लावेला

(iii) दुनिया के नइकी पतइयन से सजावेला

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कोठा-अटारी में लुका के सूते वाला के कवि का करेला ?
2. कवि केकरा के फूँक के उड़ावेला आ काहे ?
3. जनता के शोषक के उपमा कविता में केकरा से दिआइल बा ?
4. 'आँधी' कविता में आँधी केकर प्रतीक बा ?

ABSOL SOLUTIONS PATNA

दीर्घ उत्तरीय सवाल

1. 'आँधी' कविता के भाव लिखीं ?
2. आँधी कविता के प्रगतिवादी कविता कहल जाई किना, एह पर आपन विचार लिखीं ?
3. कवि समाज के शोषक लोग के कइसे सबक सिखावे के कहत बा ?
4. आँधी कविता के सारांश लिखीं ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भाषा अध्ययन

1. गूमसूम-गूमसूम, हलुक-हलुक जइसन शब्दन के एह कविता में से चुन के लिखीं।
2. एह कविता में प्रयोग भइल नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करीं –

(क) आँख पर चढ़ाइल

(ख) माटी में मिलावल

(ग) माटी में सटावल

परियोजना कार्य

1. आँधी जइसन क्रान्ति से संबंधित भोजपुरी के कवनो एगो कविता के उदाहरण दीं।
2. समाज में फइलल अराजकता के दूर करे खातिर रउआ का करब लिखीं।

शब्द भंडार

जीर्ण-शीर्ण	–	टूटल-फूटल
अमारी	–	अटारी
सहेट के	–	इकट्ठा क के
कंगूरा	–	चोटी, किला आ मंदिर के ऊपरी भाग
चसकल	–	लत लागल
टीकवे	–	सिर के बीचे राखल बाल के गुच्छ
छतिया उतान क के	–	घमंड से
दरमसे	–	रौंदे, रउंदे
निछोहे	–	निठुराई से

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - सात

रामेश्वर सिंह 'काश्यप'

रामेश्वर सिंह काश्यप के जन्म 16 अगस्त सन् 1927 ई० के सासाराम के नजदीक सेमरा (रोहतास) गाँव में भइल रहे। प्रवेशिका 1944 ई० में मुंगेर जिला स्कूल से पास कइलीं। आ पटना विश्वविद्यालय से 1950 ई० में एम० ए० कइलीं। पढ़ाई में तेज भइला के चलते आदि से अंत ले प्रथम श्रेणी प्राप्त कइलीं।

हिन्दी आ भोजपुरी दूनों में समान रूप से कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध आ नाटक लिखत रहीं। इहाँ के एगो बाल उपन्यास 'स्वर्ण रेखा' छपल रहे। एकरा अलावा 'लोहा सिंह' रेडियो नाटक से इहाँ के राष्ट्रीय ख्याति मिलल। 'अपराजेय निराला,' 'समाधान', 'मामी से भेंट', 'उलट फेर', 'बेकारी का इलाज' आदि नाटक आ एकांकी के संग्रह छप के प्रशंसित हो चुकल बा। साहित्य सृजन खातिर भारत सरकार 'पद्मश्री' सम्मान देके इहाँ के सृजनशीलता के सम्मानित कइले बा। बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष पद पर चुनाव करके सम्मानित कइले रहे। जीवन-पर्यन्त इहाँ के हिन्दी-भोजपुरी साहित्य सृजन करत रहलीं। अक्टूबर, 1992 ई० में इहाँ के मृत्यु भइल।

विषय प्रवेश

रामेश्वर सिंह 'काश्यप' के 'भोर' कविता में प्रकृति के बड़ा मोहक आ मनोहारी चित्र उकेरल गइल बा। एह कविता में भिनसहरा के बाद सबेर के जतना हृदयग्राही चित्रण कइल गइल बा, ऊ अन्यत्र दुर्लभ बा। प्रकृति के मानवीकरण के जतना स्वाभाविक प्रयोग एह कविता में भइल बा, ऊ छायावादी कविता के इयादे नइखे दिया देत, बलुक ओहमें आपन महत्त्वपूर्ण स्थानो बना लेता। भोर के नायिका के रूप में समाप्त होखे वाला रात के बुढ़िया के रूप में, तरई, चमगादड़, उरूआ आदि के प्रतीक के रूप में बड़ा सुन्दर चित्र उपस्थित कइल गइल बा। सँउसे कविता में भोर चुलबुली नायिका लेखा आचरण करत चिरंइन के खोंता में, सुहागिन के शयन कक्ष में, मुर्गीखाना में आ अउरी जगह जाके सभका के जगावे के काम कर रहल बिया। एह कविता में अद्भुत बिम्ब योजना, अलंकार योजना, शब्द विन्यास आ सौंदर्य योजना के छटा बिखर रहल बा। ई कविता प्रकृति चित्रण सम्बन्धी मानवीकरण करेवाली कविता में काफी महत्त्वपूर्ण बिया।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भोर

(1)

गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के
पुरुब किनारे तलैया नहा के
चितवन से अपना जादू चला के
ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ा के
तनिका लजा, तब बिहँस, खिलखिला के

नूपुर बजावत किरिनियाँ के निकलल,
अपना अटारी के खोललस खिरिकिया
फैलल फजिर के अँजोर

(2)

करियक्की बुढ़िया के डँटलस धिरवलस
बुढ़िया सहम के मोटरी उठवलस
तारा के गहना समेटलस बेचारी
चिमगादुर, उरूआ, अन्हरिया के संगे
भागल ऊ खँडहर के ओर।

(3)

अस उतपाती ई चंचल बिटियवा
भारी कुलच्छन भइल ई धियवा
आफत के पुड़िया, बहेंगवा के टाटी
मारे सहक के हो गइल ई माटी
चिरइन के खोंता में जा के उड़वलस
सूतल मुरुगवन के कसके डेरवलस

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कुकड़ूकूँ कइलन बेचारे चिहा के
पगहा तुड़वलन सुन के, डेरा के -

ललकी-गुलाबी बदरियन के बछरू
भगले असमनवाँ के ओर।

(4)

सूतल कमल के लागल जगावे
भँवरा के दल के रिझावे, बोलावे
चंपा चमेली के घूँघट हटावे
पतइन, फुनुगियन के झुलुआ झुलावे

तलैया के दरपन में निरखेले मुखड़ा
कि केतना बानी हम गोर

(5)

सीतल पवन के कस के लखेदलस
झाड़ी में, झुरमुट में, सगरो चहेटलस
सरसों बेचारी जवानी में मातल
डूबल सपनवा में रतिया के थाकल
ओकर पियरकी चुनरिया ऊ घिंचलस

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बरजोरी लागल बहुत गुदगुदावे,
सरसों बेचारी के अँखिया से ढरकल
ओसवन के, मोती के लोर।

(6)

परबत के चोटी के सोना बनवलस
समुन्दर के हेल्फा पर गोटा चढ़वलस
बगियन-बगइचन में हल्ला मचवलस
गवँई, नगरिया के निंदिया नसवलस

किरिनियाँ के डोरा के बीनल अँचरवा,
फैल लागल चारों ओर।

(7)

छप्पर पर आइल, ओसारा में चमकल
चुपके से गोरी तब अँगना में उतरल
लागल खिरिकियन से हँस-हँस के झाँके
जहँवा ना ताके के ओहिजो ई ताके
कोहबर में सूतल बहुरिया चिहुँक के
लाजे इंगोरा भइल, फिर चुपके
अपना मजनवाँ से बहियाँ छोड़ा के
ससुआ-ननदिया के अँखिया बचा के

घइला कमरिया पर घर के ऊ भागल
जल्दी से पनघट के ओर।

ABDIEL SOLUTIONS

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भोर कविता में 'गोरकी बिटिया' केकर प्रतीक बा ?
2. करियक्की बुढ़िया से कवि के का तात्पर्य बा ?
3. करियक्की बुढ़िया के कवन धिरावता ?
4. 'अस उतपाती ई चंचल बिटियावां, के प्रयोग केकरा खातिर भइल बा ?
5. **'भोर' कविता के कवि बानीं' -**
   (क) अशान्त (ख) भोलानाथ गहमरी
   (ग) रामेश्वर सिंह 'काश्यप' (घ) पांडेय कपिल
6. **सरसो के आँख से कवना चीज लोर बनके ढ़रकता ?**
   (क) पानी (ख) मेघ (ग) बादल (घ) ओस
7. **खोंता से चिरई के के उड़ावेला आ सूतल मुरुगवन के के जगावेला ?**
   (क) भोर (ख) पनिहारिन (ग) ललकी बदरिया (घ) शीतल पवन

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोर कविता कवना तरह के कविता बिया ?
2. भोर आवे के पहिले रात के भागे के चित्रण कवना पंक्तियन में भइल बा ?
3. कोहबर में सूतल बहुरिया काहे चिहुंक गइल ?
4. परबत के चोटी सोना कइसे हो जाला ?
5. गाँव-नगर के निंदिया नसावे के भाव का ह ?
6. छप्पर पर आके, ओसारा में चमक के अँगना में गोरी के उतरे के का अर्थ ह ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भोर कविता के भाव लिखीं।
2. सप्रसंग व्याख्या करीं।

क. करियक्की बुढ़िया के डंटलस धिरवलस
बुढ़िया सहम के मोटरी उठवलस
तारा के गहना समेटलस बेचारी
चिमगादुर उरूआ अन्हरिया के संगे
भागल ऊ खँडहर के ओर।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ख. परबत के चोटी के सोना बनवलस
समुन्दर के हल्फा पर गोटा चढ़वलस
बगियन-बगइचन में हल्ला मचइलस
गवँई नगरिया के निंदिया नसवलस
किरिनियाँ के डोरा के बीनल अँचरवा,
फैले लागल चारों ओर।

शब्द भंडार

गोरकी	–	गोर रंग के लड़की
बिटिया	–	बेटी
टिकुली	–	ललाट पर साटेवाली बिन्दिया
नहा के	–	नहइला के बाद
ललकी	–	लाल रंग के
चुनरिया	–	चुनरी
अँचरा	–	सारी के एगो भाग जे आगा रहेला, आँचर
तनिका	–	थोड़िका
किरनिया	–	किरिन
खोललस	–	खोल दिहलस
खिरकिया	–	खिड़की
फजिर	–	सबेरे भिनसहरा जब पह फाटेला
अँजोर	–	रोशनी, प्रकाश
करियक्की	–	करिया औरत
डँटलस	–	डाँट के बोलल
धिरवलस	–	धिरावल
उठवलस	–	उठावल
समेटलस	–	बटोर लिहल, इकट्ठा क लिहल
चिमगादुर	–	चमगादर, बादुर, एगो उड़े वाला स्तनधारी
उरुआ	–	उल्लू
अन्हरिया	–	अन्हार

ABSOLUTE SOLUTIONS PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भागल	–	भाग गइल
अस	–	अइसन
उतपाती	–	उपद्रव करे वाला, शरारती
कुलच्छन	–	खराब लक्षण
धियवा	–	लड़की, बेटी, धीया
आफत के पुड़िया	–	शरारती
बहेंगवा के टाटी	–	निरंकुश
सहक के	–	बहक के, शोखी से
माटी भइल	–	बरबाद भइल
चिरइन	–	चिड़िया सब
खोंता	–	चिड़ियन के घर, घोंसला
उड़वलस	–	उड़ावल
मुरुगवन	–	बहुत मुर्गा
डेरवलस	–	डेरावल
चेहा	–	अकचका के, चकित होके
पगहा	–	मवेशी के बान्हे वाला रस्सी
तुड़वलन	–	तोड़लन
बदरियन	–	बदरा के समूह
बछरू	–	बच्चा, बाछा
असमनवाँ	–	असमान
पतइन	–	पतई के बहुवचन
फुनुगियन	–	टहनी के अगिला भाग, फुलुँगी के बहुवचन
झुलुआ	–	झूले वाला एगो साधन, झूला
गोर	–	शरीर के एगो रंग, लात गोड़
लखेदलस	–	खदेरलस, भगइलस या चहेटलस
सगरो	–	सभतर, सब जगहा
चहेटलस	–	पीछा कइलस
पियरकी	–	पीला रंग के वस्तु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

घिंचलस	–	खींचलस
बरजोरी	–	जबरदस्ती
ढरकल	–	गिरल
ओसवन	–	ओस के बहुवचन, सीत
लोर	–	आंसू
हल्फा	–	लहर
बगियन-बगइचा	–	बाग-बगीचा
गँवई	–	छोट गाँव
नसबलस	–	नास कइलस
बीनल	–	बुनल
ओसारा	–	बरामदा,
ताके	–	देखे
ओहिजो	–	उँहवा
कोहबर	–	दुल्हा-दुल्हिन के सूतेवाला घर
इंगोरा	–	आग के टुकरा, अँगारा
घइला	–	घड़ा
कमरिया	–	कमर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - आठ

अर्जुन सिंह 'अशान्त'

सारन के भोजपुरी क्षेत्र में हहरत गंगा का तट के प्राकृतिक परिवेश में बसल आमी गाँव में कविवर अर्जुन सिंह 'अशान्त' के जन्म 1927 ई० में भइल रहे। आमी गाँव में अम्बिका भवानी के प्रसिद्ध मंदिर शक्ति पीठ मानल जाला। उहां का पुलिस सेवा में कार्यरत रहीं बाकिर कविता लिखल उनका जिनगी के एगो अंग रहे। कवि सम्मेलन में त उनकर सरस मधुर कविता के लोग खूब सराहते रहे, भोजपुरी गायक लोगन भी उनका गीतन से लोग के खूब मनोरंजन करत रहस। अशान्तजी मूलतः प्रकृति के कवि रहलें बाकिर जस-जस भोजपुरी साहित्य में कविता के स्वर बदलल उहाँ का भी आपन कलम ओने मोड़ दिहलीं। भोजपुरी में उनकर गजल के एगो स्थान बा। उनकर गीतन के संग्रह 'अमरलती' आ गौतम बुद्ध के जीवन पर लिखल महाकाव्य 'बुद्धायन' प्रकाशित हो चुकल बा। इहां का अब इ दुनिया में नइखीं।

विषय प्रवेश

ऋतु गीत में विभिन्न ऋतुअन में प्रकृति के बदलत रंग के मनोरम चित्रण भइल बा। 'कुहुकि-कुहुकि', 'तलफत भुभुरिया', 'झिर-झिर झिहरत' जइसन ठेठ भोजपुरी के सरस शब्दन के प्रयोग एह कविता के सौंदर्य में चार चाँद लगावता।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ऋतु गीत

कुहुकि-कुहुकि कुहकावे कोइलिया,
कुहकि-कुहकि कुहुकावे ॥
पतझड़ आइल, उजड़ल बगिया,
मधु ऋतु में टुसिआइल फुलुंगिया ।
ए हरियर-हरियर पलइन में,
सुतल सनेहिया जगावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

खिसिकल मधु-ऋतु, उठल बजरिया,
चुवल कोंच, झर गइल मोंजरिया ।
पछिया झरकि चले, तलफे भुभुरिया,
देहिया में अगिया लगावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

झुलसि गइल दिन, अउँसी के रतिया
बसे फुहार रिमझिम बरसतिया ।
करिया बदरवा के सजल करेजवा में,
चमकि बिजुरिया डेरावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

उपटि गइल भरि छिछली पोखरिया,
बिछली भइल किंच-किंचर डगरिया ।
सुनी बँसवरिया में धोबिनी चिरइया,
घुघआ पहरूआ जगावे कोइलिया ॥ कुहुकि ... ॥

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आइल शद ऋतु उगल अँजोरिया,
दुधवा में लउके नहाइल नगरिया ।
सिहरी गइल सखि छतिया निरखि चाँद,
पुरवा झटकि सिहरावे कोइलिया ।। कुहुकि ... ।।

ठिठुरि शरद ऋतु ओढ़ले दोलइया,
केंकुरी कुहरियाँ में कटेला समइया ।
मागल उमिरिया, जड़इया के जगरम
अइसन सरदिया मुआवे कोइलिया ।। कुहुकि ... ।।

सरसो-केरइया-सनइया फुलाइल,
झिर-झिर-झिहिर शिशिर-ऋतु आइल ।
सलिया गजरि गइल, तबहूँ ना हलिया,
पुरुब मुलुकवा से आवे कोइलिया ।। कुहुकि ... ।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अशान्त जी कवना जिला के निवासी रहीं ?
2. अशान्त जी कवना नौकरी में रहीं ?
3. एह कविता में कवना ऋतु के वर्णन बाटे ?

(क) बसंत (ख) शरद (ग) हेमंत (घ) हर ऋतु के

4. पढ़ल कविता के आधार पर बताईं कि का झर रहल बा ?

(क) पत्ता (ख) फूल (ग) मोंजर (घ) फल

5. के कुहुक रहल बा, ई पढ़ल कविता के आधार बताईं ?

(क) मोर (ख) पपीहरा (ग) आदमी (घ) कोइल

6. कविता में कवना-कवना चिरई के नाँव आइल बा ?

(क) कोइल (ख) धोबिनी (ग) धुधआ (घ) एह तीनों के

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बसंत ऋतु के बरनन एह कविता के आधार पर करीं।
2. वर्षा ऋतु में का हाल होला, ई पढ़ल कविता का आधार पर बतलाईं।
3. मधु ऋतु के खिसकला पर कवन चीज के बाजार उठ जाला ?
4. शिशिर ऋतु में कवन-कवन फसल फुलाला।
5. गाछ-बिरीछ के पतई कवना ऋतु में झर जाले ?
6. शरद ऋतु के अँजोरिया के बरनन करीं।
7. ऊ परिवेश कइसन बा जब देहिया में अगिया लगावे कोइलिया ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कविता के आधार बारहो मास के ऋतु चक्र में परिवर्तन कइसे होता, बतलाईं।
2. 'कोइल' के मार्फत प्रकृति के बरनन कइसे भइल बा, बतलाईं।

परियोजना कार्य

लोक प्रचलित एगो बारहमासा के खोज के लिखीं आ गाईं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्द भंडार

मधु ऋतु - बसंत
टुसिआइल - पेड़-पौधन के डाढ़ि में नया टुसी यानी कलंगी लगाल
फुलुंगिया - फुलुंगी, डेहुंगी या डाढ़ के ऊपरी हिस्सा
कोंच - महुआ के गुच्छा
पछिया - पच्छिम से चले वाली हवा, पछेया
झरकि - गरमी से भरल लहरा
तलफे - खूब गरम हो गइल
भुभुरिया - भुंभुर, राख जवन तनी गरम होखे
अउँसी - उमस से भरल
बिछली - फिसलन, बिछलहर
घुघआ - घुघुआ-एगो चिरई
पलइन - पल्लव, कलँगी
पुरवा - पुरवइया
दोलइया - दोलाई-रजाई खानी अइसन ओढ़नी जवना में रूई ना रहे, खाली कपड़ा के दुगो पल्ला मगजी से जोड़ के सीयल रहेला
केंकुरी - केंकुर के, घुड़की मार के यानी हाथ पाँव सिकोड़ के
केरइया - केराव (एगो पौधा)

भाषा सक्रियता

1. नीचे दिहल शब्द कवना तरे के हउवन स ?

पतझड़, उजड़ल, अउँसी, छिछली, कुहुकाबल, नहाइल

2. नीचे दिहल शब्दन में कवना मूल शब्दो में इया प्रत्यय जुड़ल ना

(जइसे-कोइल + इया = कोइलिया में कोइल मूल शब्द बा)

दहिया, पछिया, अगिया, करिया, बिजुरिया, डगरिया, चिरइया, बँसवरिया, उमिरिया, सलिया, समइया

3. नीचे दिहल क्रियापद से संज्ञा बनाईं, (जइसे उजड़ल से उजाड़)

टुसिआइल
बतियाइल
लतिआवल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

104

ओढ़ल

जागल

आइल –

4. नीचे दिहल क्रिया पद के मूल शब्द का होई ?

कोंचिलाइल

बिछलाइल

नहाइल

पनिआइल

5. पश्चिम से चले वाली बयार के पछेया कहल जाला, अइसहीं उत्तर, पुरुब आ दक्खिन से बहे वाली बयार के का कहल जाला ?

परियोजना कार्य

1. ऋतुराज बसंत के आगमन के समय अपना के गाँव सीवान के परिवर्तन पर एगो निबंध लिखीं।
2. लोक प्रचलित बसंत आ होली के गीत लिखीं आ अपना साथियन संगे गावे के अभ्यास करीं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाठ से बहरी के चीज

नीचे लिखल अपठित कविता पढ़ला के बाद नीचे दिहल गइल सवालन के उत्तर दीं -

घरे-घरे पहुँचल सनेसा बयार के।
आइल दिन कि हँसत बसंती बयार के।।
लहराइलि चम्पई चुनरिया बधार में,
हाट लगल सोना के नदिया-किछार में,
अझुराइलि फसलन के सुगापाँख अँचरा में।
साध-भरल अँखिया सुरतिया निहार के।
आइल दिन बिहँसत बसन्ती बयार के।।
कुहुकि उठलि कोइलिया अमवाँ के डार से,
लचकलि उमिरिया दरदिया के भार से,
मधुबन का दुअरा प भीर लगल परियन के
रस में गोताइलि जवानी सिंगार के।
आइल दिन बिहँसत बसंती बयार के।।

सवाल

1. कविता पढ़ के बसंत ऋतु के वर्णन करीं।
2. बसंत कवना महीना में चढ़ेला ?
3. कविता के लेखक के नाँव बताई ?
4. बसंत के सनेसा के घरे-घरे के पहुँचावत बा ?
5. मधुबन के दुअरा प केकर भीड़ लागल बा ?

शब्द भंडार

सनेसा	-	संदेश
बिहँसल	-	मुस्कुरात
बयार	-	हवा
डार	-	डाली
लचकल	-	झुकल

https://www.studiestoday.com